कोविड-19 : सीखने के एक साधन के रूप में

अनिल एस अंगडिकी

जब हमें समाचार चैनलों से भारत के विकसित महानगरों के कुछ लोगों में, और वह भी सिर्फ़ उनमें जो दूसरे देशों से आए थे, एक संक्रमण के बारे में पता चला तो उत्तर-पूर्वी कर्नाटक के सुदूर इलाक़े में हमें यह बात इतनी गम्भीर नहीं लगी थी। जब पूरे देश में पहले लॉकडाउन की घोषणा हुई, जिससे हमें अपने विद्यालयों को तय समय से एक महीने पहले ही बन्द करना पड़ा, तब हमें थोड़ी चिन्ता हुई। चूँकि हालात एकदम नए थे और विद्यालयों के खुलने की हमारी उम्मीदें धुँधली होनी शुरू हो गई थीं तो बच्चों के घर के हालात और उनके अभिभावकों की चुनौतियों के बारे में हमारी चिन्ता बढ़ने लगी।

एक शुरुआत

चुनौतियाँ

हर बार की तरह हालात समझने के लिए हमने चर्चाएँ शुरू कीं। हमने प्रत्येक अभिभावक के साथ अलग-अलग बातचीत की। बातचीत से हमें महामारी के उस स्याह पक्ष के बारे में पता चला जो निम्न मध्यवर्गीय परिवारों, ग़रीब और हाशियाकृत समुदायों पर असर डाल रहा है। हमें कुछ बच्चों के अभिभावकों के बारे में जानकारी मिलने लगी : कुछ अभिभावक शहरों से अपने घर लौटने के लिए संघर्ष कर रहे थे, तो कुछ अन्य निर्माण स्थलों पर काम करने या ऑटो चलाने या सड़क किनारे अपनी दुकान खोलने भी नहीं जा पा रहे थे, यहाँ तक कि पर्याप्त मात्रा में भोजन मिलना भी उनके लिए एक चुनौती थी।

उनमें से कुछ लोगों तक तो हम फ़ोन के ज़रिए भी नहीं पहुँच पा रहे थे क्यूँकि रीचार्ज का ख़र्चा उठाने में असमर्थ होने के कारण उनके फ़ोन कनेक्शन बन्द हो गए थे। बाहरी आवाजाही पर पूर्णत: पाबन्दी होने के कारण बच्चों के घर जाकर बातचीत करने और चुनौतियों से निपटने का हमारा सामान्य तरीक़ा असम्भव हो गया था।

जुड़ाव के नए तरीक़े

जब हमारी संस्था ने मानवीय एवं स्वास्थ्य सहायता में ज़िला प्रशासन की मदद करने के प्रयास शुरू किए, तो हमारी उम्मीदें बढ़ने लगीं। हमें नोडल अधिकारियों से बच्चों के घर जाकर उनसे बातचीत करने की अनुमति मिल गई।

इस प्रक्रिया ने हमें विभिन्न तरीक़ों से मदद की। इसने :

- अभिभावकों और बच्चों के साथ हमारे रिश्ते को मज़बूत किया। महामारी के बीच उन तक पहुँचने के हमारे प्रयास की उन्होंने सराहना की।
- महामारी और उससे बचाव के नियमों के प्रति जागरूकता पैदा करने में हमारी भूमिका की समझ बनाई।
- बच्चों को उनकी शैक्षणिक क्षमताओं को विकसित करते हुए प्रभावी गतिविधियों से जोड़ने के हमारे प्रयासों को शुरू करने में मदद की।

भ्रान्तियों को दूर करना

यह कोविड-19 के मामलों में बढ़ोतरी का शुरुआती दौर था। अधिकांश लोगों में इस संक्रमण के फैलने को लेकर भ्रान्तियाँ थीं। इसे रोकने के लिए चार गाँवों के अभिभावकों के साथ समूहों में योजनाबद्ध बैठकें की गईं। वायरस कैसे फैलता है, संक्रमित होने या वाहक बनने से बचने के लिए किए जाने वाले एहतियाती उपायों को कुछ प्रदर्शनों और पोस्टरों के ज़रिए प्रभावी रूप से बताया गया।

जागरूकता पैदा करने और शैक्षणिक जुड़ाव बनाने के लिए बच्चों के साथ बातचीत शुरू करने का हमारा अगला क़दम मुश्किल लग रहा था, क्योंकि शिक्षा-विभाग ने तब तक ऑनलाइन कक्षाओं की पहल कर दी थी और हमें इसका पालन करना था।

कोविड-19 के बारे में जागरूक करने के लिए अभिभावकों के साथ बैठक

बदलते तौर-तरीक़े

हमने बच्चों और अभिभावकों के पास मोबाइल फ़ोन जैसे संसाधनों की उपलब्धता के बारे में पता लगाना शुरू किया। यह संसाधन ऑनलाइन जुड़ावों में मददगार हो सकते हैं। हमारे स्कूल की डिजिटल स्थिति राज्य के अन्य गाँवों की औसत डिजिटल स्थिति से बहुत अलग नहीं थी : केवल 50 प्रतिशत अभिभावकों के पास स्मार्टफ़ोन थे। हमने प्रत्येक कक्षा के शिक्षकों और बच्चों के *व्हाट्सऐप ग्रुप* बनाने शुरू किए। पड़ोसियों को एक साथ जोड़ा ताकि इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को साझा किया जा सके।

सीखने-सिखाने के साधन जैसे कहानियाँ, कविताएँ और कुछ वर्कशीट बच्चों को या तो *व्हाट्सऐप* के ज़रिए भेजी गईं या फिर फ़ोन करके बताई गईं। बच्चों से कहा गया कि वह अपनी पूरी की हुई वर्कशीट को डिजिटल माध्यम से साझा करें। उच्च-प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए ऑनलाइन लिंक साझा करने जैसे कुछ अन्य तरीक़े भी आज़माए गए। लगभग दो हफ़्तों में हमारे पास ऑनलाइन कक्षाओं में आने वाली दिक़्क़तों और चुनौतियों के साथ-साथ इसके फ़ायदों की भी एक सूची तैयार हो गई थी।

सन्देह

सबसे बड़ी चिन्ता यह थी कि कहीं हम अपने बच्चों के मन में आर्थिक असमानता जैसा भाव तो नहीं ला रहे हैं? अपने स्कूल में हम हमेशा इस चीज़ से बचने की कोशिश करते आए हैं। हमने स्कूल में ऐसा माहौल बनाया है जिसमें सभी को सीखने, इस्तेमाल करने, खेलने आदि के लिए एक समान संसाधन दिए जाते हैं। कम आय के इस दौर में जिन अभिभावकों की पहली प्राथमिकता अपने बच्चों को भोजन और आश्रय प्रदान करना है, जिनके पास टीवी भी नहीं है, उनसे हम अपने बच्चों को स्मार्टफ़ोन दिलाने की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं? क्या हम ऑनलाइन साधनों के माध्यम से शैक्षणिक सहायता के एक अस्थायी खालीपन को भरने के नाम पर सामाजिक न्याय और मानवतावादी मूल्यों के आदर्शों की अनदेखी कर रहे थे?

हमारे मन में इन सब बातों के आने का कारण इस प्रक्रिया के दौरान हुई कुछ घटनाएँ थीं। हमने देखा कि परिवार में एकमात्र स्मार्टफ़ोन केवल अभिभावक (मुख्यत: पिता) के पास होता था। पिता अपने बच्चों को केवल स्कूल की पढ़ाई के लिए इसका उपयोग करने की अनुमति देते थे। पर वह भी देर शाम को और कभी-कभी तो देते ही नहीं थे। कई बार, फ़ोन में इंटरनेट डेटा भी अपर्याप्त होता था। इन सब बातों के चलते कुछ बच्चे अपने ख़ुद के स्मार्टफ़ोन की माँग करने लगे। लड़कियों के लिए तो हालात और भी बुरे थे। क्या हम सीखने-सिखाने के तरीक़ों के नाम पर न्यायपूर्ण, मानवीय और समतामूलक समाज की अवधारणाओं का त्याग कर रहे थे, जबकि वास्तव में तो सीखने-सिखाने के तरीक़ों को इन मूल्यों को स्थापित करने प्रबल साधन होना चाहिए? यह कुछ ऐसे सवाल थे जो हमने ख़ुद से पूछे।

हमारे चिन्तन के परिणामस्वरूप चर्चाओं का दूसरा दौर शुरू हुआ। हम सभी इस बात पर सहमत थे कि इन परिस्थितियों में बच्चों के साथ बातचीत करने का सबसे प्रभावी तरीक़ा आमने-सामने की बैठकें होंगी। अन्त में हमने यह तय किया कि गाँवों में बच्चों के छोटे समूहों तक पहुँचा जाए। चुनौती यह थी कि पहली कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा तक के हमारे बच्चे पाँच से दस किलोमीटर की दूरी में फैले हुए छह गाँवों में रहते थे!

काम करने की योजना

जो सबसे अच्छा विचार उभरकर आया, वह था जागरूकता के साथ-साथ अकादमिक शिक्षण के लिए एक थीम के रूप में कोविड-19 को इस्तेमाल करना। इसलिए भाषा (कन्नड़, अँग्रेज़ी और हिन्दी), विज्ञान, सामाजिक विज्ञान को समाहित करके शिक्षण के लिए एकीकृत दृष्टिकोण वाली योजना बनाई गई। ऐसे में महामारी से बेहतर प्रासंगिक सामग्री भला क्या हो सकती है, जब बच्चे समाचार पत्रों, टीवी चैनलों, समुदायों के बीच की चर्चा और घर पर हो रही बातचीत के माध्यम से लगातार इसके बारे में देख/सुन रहे थे? शिक्षकों के छोटे समूहों ने इस विषय पर काम किया। चूँकि शिक्षक समूह में शामिल बच्चों के सीखने के स्तर से परिचित थे, इसलिए उनका काम थोड़ा आसान हो गया था।

हमारे द्वारा चुने गए कुछ विषय थे : सूक्ष्मजीवों का परिचय जिनके साथ हम रह रहे हैं, कुछ सामान्य वायरल बुखार (जैसे फ्लू) के उदाहरण जो हमारे स्वास्थ्य पर असर डालते हैं, *कोरोना* नामक वायरस के एक नए स्ट्रेन का परिचय, टीके (वैक्सीन) जैसे शब्दों से परिचय और पूरी दुनिया में तरह-तरह के एहतियाती क़दम क्यों उठाए जा रहे थे। हमने इनमें से कुछ का वर्णन करने के लिए वीडियो का उपयोग किया। इस बारे में

भी चर्चा की कि वायरस कैसे फैलता है और मास्क पहनने व हाथ धोने जैसे स्वच्छता तरीक़ों को अपनाकर और शारीरिक दूरी बरतकर संक्रमण से कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। हमने *क्वारंटाइन, आइसोलेशन, टैस्टिंग* जैसे नए शब्दों के बारे में भी बताया।

इससे बच्चों की ज़िन्दगी पर लॉकडाउन के प्रभाव के बारे में चर्चाएँ शुरू हुईं। यह चर्चाएँ बच्चों के ख़ुद के अनुभव और उनके द्वारा समाचारों से इकट्ठा की गईं देश के अन्य क्षेत्रों की केस स्टडी पर आधारित थीं। हम डेटा-हैंडलिंग और विश्लेषण जैसे मुद्दों पर भी चर्चा कर पाए।

इसी तरह, इतिहास और भूगोल पढ़ाने के लिए हमने पहले आई महामारियों पर नक़्शों की मदद से चर्चा की। कहानियाँ, कविताएँ, गीत, चार्ट, पोस्टर, केस स्टडी, अख़बार की कटिंग, नक्शे, हमारे द्वारा तैयार किए गए और *यू-ट्यूब* से चुने गए वीडियो आदि कुछ ऐसे संसाधन थे जिन्हें हम इस्तेमाल में लेते थे। टीम द्वारा किए गए इन सभी प्रयासों ने बच्चों को विषय के बारे में सुनने, अवलोकन करने और उस पर चर्चा करने में मदद के साथ-साथ महामारी के बारे में जागरूकता पैदा करने में भी मदद की। धीरे-धीरे समय के साथ हमारी समय-सारिणी और प्रत्येक समूह से हमारी मुलाक़ात दोनों और अधिक प्रभावी होने लगीं। इसके साथ ही अभिभावक भी हमारे कार्य से काफ़ी आश्वस्त नज़र आए।

इस कार्य ने विभिन्न विषयों के लिए आवश्यक कौशलों को प्राप्त करने के लिए कोविड-19 महामारी द्वारा उभरी कई सम्भावनाओं से अवगत कराया। परियोजनाएँ बनाना आसान हो गया था। उदाहरण के लिए, कार्यस्थल पर हम हाथों को साफ़ रखने के नियम का पालन करते थे और यदि कभी यह नियम टूटता तो संवाद किया जाता था। पोस्टर और बुकलेट बनाने से बड़े बच्चों के मन में ज़िम्मेदारी और भागीदारी की भावना आती थी।

बच्चों के छोटे समूहों के साथ कार्य करते शिक्षक

चुनौतियाँ

बेशक, टीम को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कार्य के दौरान कुछ बच्चों की उपस्थिति अनियमित थी क्योंकि उनके अभिभावक उन्हें काम करने के लिए खेत ले जाते थे। और चूँकि यह स्कूल के दिन नहीं थे, इसलिए कोई नियम लागू नहीं होते थे।

कार्यस्थलों को लेकर भी कुछ चुनौतियाँ रहीं। उदाहरण के लिए कुछ जगहों पर काफ़ी भीड़ थी, तो कुछ जगहों पर जल-जमाव की समस्या थी। कोविड-19 के संक्रमण के ख़तरे के बीच गाँवों में जाना और परिवहन की अनुपलब्धता भी एक बड़ी चुनौती थी।

अनुभवों से सीख

- इस अवधि के लिए एक विशिष्ट विषय को इस्तेमाल करके तैयार की गई प्रासंगिक सामग्री भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन आदि में बच्चों की बुनियादी दक्षताओं के विकास में प्रभावी है।
- डिजिटल सामग्री के उपयोग के साथ-साथ आमने-सामने मिलकर कार्य करना प्रभावी प्रतीत होता है, ख़ासकर उच्च-प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए।
- 'दूर सभा' टेलीकान्फ्रेंस जैसे कुछ साधन उपयोगी होते हैं क्योंकि इनका उपयोग साधारण फ़ोनों पर किया जा सकता है। और इसमें बच्चों को अँग्रेज़ी बोलने में कम संकोच होता है क्योंकि इसमें वीडियो नहीं दिखता है।
- आमने-सामने मिलकर कार्य करना बेहतर है क्यूँकि शिक्षार्थी, उनके साथियों और सुगमकर्ता के बीच की सीधी बातचीत से व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने की सम्भावना बढ़ जाती है। साथ ही यह प्रत्यक्ष भागीदारी, जिसमें पाँचों इन्द्रियों का इस्तेमाल किया जाता है, को प्रोत्साहित करता है और बेहतर ढंग से सीखने में मदद करता है।

टीम के प्रयासों के परिणामस्वरूप नियमित विद्यालयों में डिजिटल सामग्री का निर्माण और इस्तेमाल होना शुरू हो गया है। इन प्रयासों ने शिक्षकों को कक्षा से बाहर निकलने और बाहर जाकर शिक्षण करने को लेकर अधिक आश्वस्त किया है। इस तरह महामारी ने हमें नई चीज़ों को सीखने का मौक़ा दिया है, जिन्हें हम अपनी सामान्य कार्य योजनाओं में भी इस्तेमाल में ले सकते हैं।

अनिल एस अंगडिकी 2012 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हुए हैं और फ़िलहाल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, जिला संस्थान यादगीर, कर्नाटक में अज़ीम प्रेमजी स्कूल में कार्यरत हैं। फ़ाउण्डेशन के साथ जुड़ने से पहले वह नौवीं और दसवीं कक्षा को रसायन विज्ञान पढ़ाते थे। उनसे **anil.angadiki@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी